DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Sub. — SANSKRIT
Paper — I

5×3 = 15 Marks

कारक प्रकरणम्

कारक-सूत्र व्याख्या

3. तथायुक्तं चानीप्सितम् (1/4/50)

कर्तृगत क्रिया प्रयोज्य फलाश्रय अनीप्सित की भी कर्म संज्ञा होती है अर्थात् इप्सिततम् के सदृश क्रिया के द्वारा प्राप्त करने के लिए जो अनीप्सित है, उस कारक की कर्मसंज्ञा होती है। सूत्र 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' में 'तथा' शब्द सादृश्यवाची है पूर्व सूत्र 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' के निकट होने के कारण 'तथा' का अर्थ ईप्सिततमवत्, लिया जाता है। जो वस्तु ईप्सित न हो वह 'अनीप्सित' होती है अर्थात् या तो वह द्वेष्य होती है या उपेक्ष्य। जिस प्रकार क्रिया से युक्त कर्ता की ईप्सिततम् वस्तु को कर्म कहते हैं उसी प्रकार क्रिया से सम्बन्ध रखनेवाली अनीप्सित (उपेक्ष्य या द्वेष्य) वस्तु भी कर्मकारक में होती है। यथा— 'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'। यहाँ 'जाना' क्रिया के सम्बन्ध से 'ग्राम' कर्ता का ईप्सिततम् है। गमन क्रिया करते हुए स्पर्श क्रिया भी अनायास ही हो जाती है; स्पर्श क्रिया से युक्त 'तृण' कर्ता को उपेक्ष्य होते हुए भी (ईप्सित न होने पर भी) उक्त सूत्र से उसकी कर्मसंज्ञा होने पर कर्मकारक में होगा और जहाँ 'तृणं स्पृशति' में 'तृण' स्पर्श क्रिया के सम्बन्ध से कर्ता को 'ईप्सिततम्' है वहाँ तो कर्म होगा ही।

* * *

क्रमशः जारी

Scanned by TapScanner